स. श्रो.वि./एफ.डी./ 75-84/32043.—चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हैदराबाद ऐसबेसटस सीमेक्ट प्रीहेक्टस, बस्लबगढ, के श्रामिक श्री मृत चाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई प्रीद्योगिक विवाद है:

भ्रौर चुकि हरियाणा के राज्यपार विवाद को ल्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाष्ट्रनीय समझते है ;

इसलिए प्रत्न भीडोगिक विकाद प्रक्षितियम, 1947, की धारा 19 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करने हुंचे, हरियाणा के गान्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पहने हुये अधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958, द्वारा उक्त अधितियम की धारा 7 की प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फ़रीदाबार, को बिवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते है हो कि उक्त प्रवत्धका तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद में सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री भल बन्द की सेवाओं के समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

म आ विनाम ही.- 2/207-8 4/3 206 4.---चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. ब्रानन्द इंजिनियरिंग, 2-एच/17, पार्क मार्केट शाप, एन, प्राई. टी. फरीद बाद, के अमिक श्री गिवीक्स तथा उसके प्रजन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई प्रीछोगिक विवाद है.

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की त्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वाळनीय समझते है ;

इसलिए, ग्रंब, ग्रीडोगिक विवाद ग्रिवित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का श्रयोग करतें हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415—3-श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 1.495-जी-श्रम—57/11245, दिनांक 7 फ़ैरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फ़रोदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णाय के किए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवन्थकों तथा श्रमिक। के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित नामला है :--

म्या श्री गिवानम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ? .

सं. मो.वि., जी.एन., 52-35, 32,118-- चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में. पोली सैक्स, 15/1, गुड़गाव रोड, गुड़गांव, के श्रमिक श्री शिव हरस्व तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ब्रौद्योगिक विवाद है

ग्रोर वृक्ति इरियाणा के राज्यपान (विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसिलए प्रव, ग्रांछोगिक विवाद धिधिनयम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरियाणा के र ज्यानल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून 1968. के साथ एउने हुए प्रधिसूचना नं 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फंरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनयम की धारा 7 के ग्रंथीन गठित श्रम न्यायालय करोधावाद, को विवाद ग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामना न्यायिनिर्णय वे लिए लॉवएट करने है जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रंथवा सर्वाधन मामला है —

भ्या श्रो प्रिव हरख की सेवार्थों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है 🖰

पं म्रो.वि जी.जी.एन./49-85/32125--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मैं टार्टक्स, प्लाट तं० 240, उद्योग बिहार बुडाहेडा (गुड़गांव) के श्रमिक प्रां पंक्रियेल शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य उसके बाद लिखित मामले में कोई ब्रीडोगिक विवाद है ;

भौर न्कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

्मिलिए, ग्रंड, ग्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्द शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रश्चित्तवना मं. 5415/3-श्रम-63/15254, दिनांक 20 जून 1968, के साथ गटते हुए प्रधिसूचना स 11495-जी-श्रम- 57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम को धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यापालय करोदाबाद को विवादग्रस्त या उसमें मुसगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यापितण्य के लिए निदिष्ट करते है को कि उक्त प्रजन्धको तथा श्रमिक के बीचे या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है ---

क्या और रिछपाल गर्मा की सेवाका का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? पदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?